IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"श्रीमद् भागवद् गीता के शैक्षिक दर्शन का अध्ययन"

(A Study of the Educational Philosophy of Shrimad Bhagvad Gita)

डॉ0 के0एन0 गुप्ता

एसो॰ प्रो., शिक्षा संकाय (बी0एड0)

वी0एस0एस0डी0 कालेज कानपुर

प्रस्तावनाः

श्रीमद् भगवद गीता भारतीय विचार धारा का एक अत्यन्त लोकप्रिय, दार्शनिक, धार्मिक और नैतिक मूल्यों से ओत प्रोत काव्य है। महाभारत के भीष्म पर्व का एक अंश भगवदगीता है। गीता सक्रिय जीवन का मार्गदर्शक हैं। इसमें 700 श्लोक 18 अध्यायों में वर्णित है। छः अध्यायों में आत्मा के ज्ञान का विवेचन किया गया है। दूसरे छः अध्यायो में विश्वज्ञान तथा शेष छः अध्यायों में आत्मा के ज्ञान का विवेचन है। ईश्वर, जगत और जीवात्मा तीन तत्व गीता के वर्ण्य विषय कहे जाते है। महाभारत के रचयिता महर्षि वेदव्यास थे। यह सहज, संस्कृत भाषा में लिखा गया है। महाभारत का महत्वपूर्ण अंश श्रीमद भागवत गीता श्री कृष्ण और अर्जुन का संवाद हैं। इसमें धर्म, कीर्ति, दर्शन, ज्ञान एवं मूल्यों का समावेश है। ज्ञान प्राप्ति के मार्ग के द्वारा ही मोक्ष को प्राप्त करने के साधन के रूप में संवाद निहित है।

दार्शनिक विचार:

गीता के अनुसार व्रहम या ईश्वर सर्वोपरि है, जो अविनाशी, चेतना प्रकाशक, शुद्ध सच्चिदानन्द अविधा से परे सर्वत्र व्याप सर्वकालिक और अनादि है। सर्वोपरि के दो रूप है– अव्यक्त निराकार, निर्गुण अनन्त अविनाशी स्वरूप या व्रहम का निर्गुण स्वरूप है। सगुण रूप जो अविनाशी, अजन्मा सब प्राणियों का ईश्वर होने पर भी अपनी प्रकृति के अधीन कर योग माया से प्रकट होता है। गीता दर्शन को जानने के लिए यह जानना आवश्यक है कि विश्व की प्रकृति क्या है? मानव की प्रकृति क्या है? ज्ञान का स्वरूप क्या है ? सत्य या वास्तविकता

क्या है? इसमें दो प्रकार की प्रवृत्तियों का उल्लेख किया गया है। अपरा प्रकृति वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, मन और अहंकार बुद्धि से युक्त हैं। यह अचेतन भौतिक व जड़ है। परा प्रकृतिको चेतन तत्व से समन्वित है। जगत को धारण करती है।

तत्व मीमांसा: ब्रह्म क्षर और अक्षर रूप हैं। सभी प्राणियों में स्थित हैं। ब्रह्म ईश्वर या पुरुषोत्तम, अज, अनादि, अव्यय, सर्वव्यापी, सर्वलीलामयी है। वह अज होकर भी जन्म लेता है। वह अकर्ता होकर भी कर्म करता है। उसके जन्म को अवतार कहते हैं। प्रत्येक युग में उसका अवतार है। ब्रह्म या भगवान पर भाव में अनन्त, अचिन्तय और अव्यय है और अपर भाव में योगमाया से मुक्त, लीलामय जगत का स्वामी विश्वात्मा, विराट स्वरुप वाला हैं। अन्तिम वास्तविकता सर्वोच्च सत्ता हैं।

आत्मा: ब्रह्म का सनातन अंश जीव है। जीव ब्रह्म की परा प्रकृति है। जीव मृत्यु के बाद ब्रह्म में लय हो जाता है। मनुष्य देह में इस प्रकार जीव और ब्रह्म दोनों होते हैं। जीव प्रकृति – जगत गुणों से युक्त होकर भोक्त है और भिन्न सत असत योनियों से जन्म लेता है। जीव का उपदेष्टा, अनुमत्ता, भर्ता और पावक ब्रह्म है। ब्रह्म सभी क्षेत्रों का क्षेत्रज्ञ है। श्री कृष्ण का कथन है कि "जिस प्रकार मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर नए वस्त्र को धारण करता हैं। उसी प्रकार जीवात्मा पुराने शरीर को त्यागकर नये शरीर में प्रवेश करती हैं।" आत्मा परमात्मा का अंश है। इसका अन्तिम लक्ष्य परमात्मा में विजीन होना है। निष्काम कर्म अर्थात बिना स्वार्थ की भावना से काम करने से परमात्मा या मोक्ष की प्राप्ति सम्भव है। यह जीवात्मा अविनाशी, अजन्मा, सर्वांगत, नित्य, शाश्वत, अचिन्त्य, सर्वव्यापक, निर्विकार और अव्यक्त है। यह परमात्मा का ही सनातन अंश है। प्रकृति के तीन गुण सत्व, रज और तम शरीर को बांधते हैं।

पुरुषोत्तम: यह गीता के पुरुषोत्तम परम तत्व हैं जो निर्गुण एवं सगुण दोनों है। उसमे परब्रह्म की निर्विकारिता और ईश्वर की क्रिया शीलता दोनों का समावेश हैं। यह नाशवान शरीर व् अविनाशी जीवात्मा से श्रेष्ठ है। यह नाशवान शरीर व् अविनाशी जीवात्मा से श्रेष्ठ है और अपने भक्तो को ज्ञानोपदेश देने के लिए उद्यत रहता है।

ज्ञान मीमांसा:

जगत्: गीता में जगत के विषय में कहा गया है कि जिस प्रकार बीज से वृक्ष उत्पन्न होता है तथा अन्त में बीज में ही विलीन हो जाता है उसी भांति यह जगत पर ब्रह्म से उत्पन्न होता है और पुन: उसी भगवान में विलीन हो जाता है। इस प्रकार इस जगत की उत्पत्ति और विषय का कारण पर ब्रह्म ही है।

ज्ञान योग: गीता के व्यावहारिक पक्ष में ज्ञान, कर्म और भक्ति का अदभुत समन्वय बताया गया हैं। इन मार्गो की साधना करके ईश्वर की प्राप्ति की जा सकती है। अज्ञान का अन्त करने के लिए ज्ञान अनिवार्य है। ज्ञान के दो रूप है – लौकिक ज्ञान और आध्यात्मिक ज्ञान। आध्यात्मिक ज्ञान वस्तुओं के वास्तविक स्वरुप का ज्ञान प्राप्त करता है। ज्ञान के कर्मों की अपवित्रता का नाश होता है। गीता में श्री कृष्ण कहतें हैं कि जो ज्ञाता है वह हमारे सभी भक्तों में सर्वश्रेष्ठ हैं।

कर्मयोग: गीता में कर्म का अर्थ कर्तव्य अथवा सामाजिक दायित्व से सम्बंधित है। योग का जोड़ने या संलग्न में प्रयुक्त किया जाता है। कर्म योग का मतलब सामाजिक दायित्वों में संलग्न होना। श्री कृष्ण कहते है – "कर्म पर ही तुम्हारा अधिकार है। कर्म फल पर नहीं। तुम कर्म फल का हेतु भी मत बनों और अकर्म में तुम्हारी आसबित न हो। इस प्रकार कर्म फल की इच्छा रखने और निष्काम कर्म को आदर्श बनाने का उपदेश देती है। कर्मयोग की कामना रहित होने के कारण अनाशक्ति योग" भी कहा गया है। अनाशक्ति कर्मयोग से व्यक्ति सांसारिक बन्धनों से मुक्त होकत ब्रह्मज्ञान या आत्मज्ञान प्राप्त करता है।

भक्तियोग: ईश्वर में श्रद्धा रखकर नि:स्वार्थ भाव से कर्म करके व्यक्ति मोक्ष को प्राप्त करता है। श्री कृष्ण कहते है कि "ज्ञान प्राप्ति के लिए श्रद्धा एवं भक्ति आवश्यक है। तभी भगवान अपने भक्तो को पूर्ण आश्वस्त करते है।"

माया: गीता दर्शन ईश्वर के अवतार और उसकी लीला में विश्वास करता है। माया से युक्त होकर भगवन पुरुश्त्तम जगत को प्रकट करते हैं। सद और असद से माया परे हैं। गीता में माया का रूप मानुषी, पाशवी, दिव्य कहा गया है। ईश्वर का विधान मायावी है। माया ही ज्ञान, भक्ति और मोक्ष की ओर उन्मुख करने वाली शक्ति हैं।

मूल्य मीमांसा:

गीता का मूल्य मीमांसा का अंर्तराष्ट्रीय महत्त्व का है। इसका लक्ष्य मानवता का कल्याण है। इसमें शाश्वत सुख व् शांति का मार्ग सुझाता हैं। चरित्रहीनता, भटकन, क्रिंकर्त्व्यमूढ़ता जो समाज से ब्याप्त है उसको गीता दर्शन के अध्ययन से दूर किया जा सकता हैं। अनिश्चितता, अनिर्णय, दुविधा या असमंजस की स्थिति में गीता के मूल्य मीमांसा के उप्देश ही मार्गदर्शक हो सकते है। संसार में जीवन जीने की शिक्षा इस दर्शन में है। यह ज्ञान योग, भक्ति योग और कर्म योग की शिक्षा देता है। उसमे मोक्ष के मार्ग पर प्रशस्त होने का उपाय निहित है। इसमें कर्म संस्कृति और उत्सवों-मुखी संस्कृति की तरफ संकेत करता है। गीता में संयम बोध का वर्णन हैं। इसमें सम्पूर्ण कामनाओं को त्याग कर ममता रहित, अहंकार रहित, स्पृहा रहित होकर शान्ति के प्राप्ति का निर्देश है। संसार के बन्धन से मुक्त होने की कल्पना करता हैं। गीता सबका हित रखने वाला मित्र, उदासीन, द्वेष रहित होने का संदेश है। गीता में योग को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। सात्विक तत्वों का उल्लेख है बुद्धिबल, आरोग्य, सुख, सात्विक पुरुष के उपदेश दिए गए हैं। सार्वभौमिक नियम बताये गए है। मूल्य मीमांसा व्यवहारिक है। वैश्विक परिप्रेक्ष्य में सुख-शान्ति का रास्ता है। मानव मूल्यों का भण्डार है। गीता जीवन में आत्मानन्द की अनुभूति कराने का माध्यम है। गीता में सर्वधर्म समभाव, अभय, स्वार्थपरता, भौतिक संकुलता, मानवीय मूल्यों के ह्रास पर प्रकाश डाला गया है। गीता संसार को नयी गति और नयी दिशा दे सकती है।

शैक्षिक विचारः

शिक्षा का सम्प्रत्ययः

शिक्षा का तात्पर्य गीता में ज्ञान से है। ज्ञान दो प्रकार के है आध्यात्मिक ज्ञान तथा सांसारिक ज्ञान। सांसारिक ज्ञान मनुष्य को इस संसार के कर्म करने में सहायता देता है और आध्यात्मिक ज्ञान व्रहम से मेल कराने अर्थात मोक्ष प्राप्त कराने में सहायता देता है। गीता में शिक्षा का तात्पर्य आत्म ज्ञान या व्रहम ज्ञान से है। गीता में सात्विक, राजसिक तथा तामसिक ज्ञान बताया गया है। शिक्षा यदि ज्ञान है तो वास्तविक ज्ञान ही शिक्षा है। ज्ञान तत्वदर्शन, ऊनात्य और आत्मा के ज्ञान के संश्लेषण है। ज्ञान एवं कर्म का योग ही जीवन की एक शिक्षा प्रणाली बनाती है और गीता के अनुसार यही सच्ची शिक्षा है, गीता यही सिखाती है। 'ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः' अर्थात ज्ञान के बिना मुक्ति नही मिलती है। शिक्षा ज्ञान की प्राप्ति कर्म या अभ्यास से होती है। शिक्षा ज्ञान संसार में पवित्र है। शिक्षा या ज्ञान से मनुष्य स्व को शान्ति मिलती है।

शिक्षा का उद्देश्यः

- *मोक्ष प्राप्ति का उद्देश्य* – मोक्ष प्राप्ति निष्काम कर्म द्वारा ही सम्भव है। आत्म ज्ञान होना चाहिए। मनुष्य स्व को पहचान सके। काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ और माया की आशक्तियों से दूर रहे। इन्द्रिय निग्रह सांसारिक दुखों से मुक्ति का मार्ग बताया गया है।
- *आध्यात्मिक विकास* – मनुष्य स्थूल और सूक्ष्म का एक ऐसा समुच्चय है जो कर्म बन्धनों में बंधकर जीवन जीने के लिये विवश है। सूक्ष्म अर्थात आत्म तत्व और भौतिक जगत का ज्ञान पाप्त कर सांसारिकता से दूर रहना चाहिए।
- *मानसिक विकास*– गीता दर्शन मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण पर बल देता है। बालक मानसिक स्वतन्त्रता के आधार पर निर्णय ले सके। भय शोक और मोह को त्यागकर मानसिक रूप से स्थिर प्रज्ञ होकर जीवन के लिए कार्य करें।
- *व्यक्तित्व का विकास*– शिक्षा के द्वारा मनुष्य संतुलित एवं साम्य प्राणी बनता है गीता के अनुसार से संसार में जो भी प्राप्त है वह देवी सम्पदा है। मानसिक स्वतन्त्रता के साथ ही व्यक्तित्व को विकसित करता है।
- *सामाजिक एवं राष्ट्रीय विकास*– गीता दर्शन में सामाजिक एवं राष्ट्रीय उन्नयन हेतु सामाजिक एवं राष्ट्रीय विकास का उद्देश्य आवश्यक बताया गया है। सदाचारिता, बुद्धिमत्ता, स्वाध्याय, निर्भयता, संयम, तप, यज्ञ, सत्य, सदाचरण, अस्तेय, कर्म फल आदि की आवश्यकता महसूस की गयी। राष्ट्रीय विकास के लिए दान त्याग अक्रोध, नैतिकता और परोपकार आदि आवश्यक माना गया।
- *सद्गुणो की प्राप्ति का उद्देश्य*– शिक्षा या ज्ञान के कारण मनुष्य की दैवीय प्रकृति प्रकाशित एवं विकसित होती है। गीता में निर्भयता, सद्भावना, बुद्धिमता, दान, संयम, तप, स्वाध्याय, सदाचार, सत्य त्याग अस्तेय धैर्य, शुद्धता आदि गुणों की प्राप्ति होती है।

पाठ्यक्रमः

पाठ्यक्रम को दो भागें में बाँटा जा सकता है। अपरा शिक्षा दूसरा परा शिक्षा। अपराविद्या में इस संसार और आत्मा की धारणा करने वाले मानव शरीर से सम्बन्धित वस्तुओं के ज्ञान से है। परा विद्या का आशय आत्म ज्ञान से है। अतः इसके लिए पाठ्यक्रम क्रमशः सभी प्रकार के विज्ञानों का अध्ययन रसायन शास्त्र, भौतिक शास्त्र, नक्षत्रविद्या, यान्त्रिकी, वनस्पति शास्त्र, जीवशास्त्र, शरीर और स्वास्थ्य विज्ञान, अर्थशास्त्र, इतिहास, भूगोल राजनीति, गणित, धनुर्विद्या, अनुभवात्मक ज्ञान, आध्यात्मिक ज्ञान नैतिक कर्म नैतिक मूल्यों की शिक्षा, संयम सदाचार धर्म, कर्म, दान आदि पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया। पाठ्यक्रम में वर्णव्यवस्था एवं पुरूषार्थ को भी स्थान दिया गया था। संगीत, नृत्य, चित्रकला एवं ललितकथाओं का भी अध्ययन कराया जाता था।

शिक्षण विधियाँः

- *प्रश्नोत्तर विधि*– सम्पूर्ण गीता में श्रीकृष्णा और अर्जुन संवाद प्रश्नोत्तर विधि के माध्यम से होता था। प्रश्नोत्तर विधि के द्वारा गुढ़ तत्वों को समझाया गया।
- *वार्तालाप विधिः* श्री कृष्ण और अर्जुन की शंकाओं का समाधान वार्तालाप के रूप में किया गया। वार्तालाप के माध्यम से तत्व ज्ञान को जन साधारण तक पहुंचाने का प्रयास किया जाता है।
- *तर्क विधिः* श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन के मोह भंग करने हेतु तर्क विधि का प्रयोग हुआ है। अर्जुन तर्क विधि द्वारा श्री कृष्ण के उपदेशों को काटने का प्रयास करते है।
- *मौखिक विधिः* गुरू शिष्यों को मौखिक विधि से ज्ञान प्रदान करते थे। मौखिक रूप से ज्ञान प्रदान करने से शिष्य कंठस्थ कर लेते थे।
- *अनुकरण विधिः* महापुरूषों के आदर्श जीवन का अनुकरण करते थे। महापुरूषों के अनुसार आचरण शिष्य करते थे।
- *क्रिया प्रधान विधिः* बालक क्रिया विधि, इन्द्रिय प्रशिक्षण, स्वानुभव एवं खेल विधि के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करते था। कर्म प्रधान शिक्षा होती थी।
- *ज्ञान प्रधान विधिः* विश्लेषक विधि तर्क विधि सापेक्षता विधि, स्मरण मनन, निदिध्यासन विधि से शिक्षा ग्रहण करते थे। यह ज्ञान प्रधान विधि थी।

- *भावना प्रधान*: बालक स्मरण, कीर्तन, पद सेवा, अर्चना, आत्मनिवेदन कर भाव प्रधान ज्ञान प्रदान करते थे।

विद्यालयः

गीता दर्शन के अनुसार शिक्षा तीन प्रकार की थी– प्रथम गुरूकुलों में, ऋषियों के आश्रमों में रहकर, द्वितीय प्रसिद्ध विद्वान आचार्यो के घर पर रहकर और तृतीय स्वाध्याय से। भगवत् गीता में विद्यालय या शिक्षा संस्था के सम्बन्ध में उल्लेख नहीं है। शिक्षा व्यापक रूप से संसार से प्राप्त होने वाला जीवन का समस्त अनुभव व ज्ञान है। ऐसी दशा में यह 'संसार धर्म क्षेत्र कुरूक्षेत्र' है। अनुभव व ज्ञान की पाठशाला है। कुरूक्षेत्र को तप क्षेत्र कहा है। शिक्ष भी एक तप है। अतः कुरूक्षेत्र या कर्मक्षेत्र या संसार ही गीता के अनुसार विद्यालय है। शिक्षा की संस्था भो संसार है। जिसका स्वरूप कृष्ण का विश्व रूप कहा जाता है।

अनुशासनः

इस दर्शन के अनुसार अनुशासन धर्म का ही एक रूप है। गीता में मानवीय धर्म और उसके आचरण की अत्यन्त सुन्दर व्याख्या की गयी है। व्यक्ति को स्वयं को कठोर नियन्त्रित एंव राग दोष से मुक्त रहना चाहिए। निरन्तर कर्म में रत रहना ही अनुशासन और संयम है। शिक्षा सार्वभौमिक हैं। निष्काय कर्म योग की बात करते है। स्वार्थपरक आवेगों पर निजय प्राप्त करना होगा। काम क्रोध, मद, लोभ, पर संयम रखना होगा।

शिक्षकः

शिक्षक आदर्श गुरू होना चाहिए। शिक्षक ज्ञानी, परा–अपरा विद्याओं में निपुण, विद्यार्थी के लिए पिता तुल्य आदर्श होना चाहिए। शिक्षक स्वय सद्चरित्र और विद्वान होते थे। गीता में शिक्षक को महान आत्म के रूप में देवतुल्य स्थान प्राप्त है। बालक के प्रति उदारवाद दृष्टिकोण मिलता है। शिक्षक पाप को हरण करने वाला अव्यक्त विष्णु है। यज्ञानता का विनाश करने वाला गुरू होता हैं। गीता में गुरू को आचार्य और देशिक भी कहा गया। गुरू प्रेरक, सूचक, बोधक, वाचक, दर्शक और शिक्षक है। गीता के अनुसार उपदेश देने वाला कुशल व श्रेष्ठ होता है। शिक्षक अन्धकार का नाश कर उसे सत्यमार्ग दिखाने वाला होता है।

शिक्षार्थी:

बालक या शिक्षार्थी पूर्णसत् और असत् का समुच्चय है। वह भी अव्यक्त पुरूषोत्तम की सुन्दरतम् कीर्ति है। शिक्षार्थी मात्र इन्द्रिय युक्त शरीर ही नहीं अपितु दैवीय भी है। शिक्षार्थी व्रहमचारी, रोगद्वेष से मुक्त, आत्म नियन्त्रण करने वाला, शान्त, दृढसंकल्प, मनसा, वाचा, कर्मणा से पवित्र हो।

शिक्षक–शिक्षार्थी सम्बन्ध:

इस दर्शन के अनुसार गुरू शिष्य सम्बन्ध मधुर होते थे। आचार्य के प्रति विद्यार्थी श्रद्धा एवं भक्ति रखते हो। वे अपने आचार्यो के प्रति अभद्रता एवं दुराग्रह का भाव नहीं रखते। आचार्य शिष्यवत् प्रेम करते थे। दोशिक अर्थात् देवता, शिष्य, और करूणा से है। देशिक आचार्य को कहते थे। गुरू और शिष्य सम्बन्ध पुत्रवत था।

दार्शनिक विचार :

निष्कर्ष एवं सुझाव :

भारतीय शिक्षा दर्शन की विचार धारा में गीता की शिक्षा का महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इसके द्वारा समाज में धार्मिक सहिण्णुताका शिक्षा समाज के लिए अनुकरवीय है। यह शिक्षा धर्म, जाति सम्प्रदाय और देश काल से परे है। पर और अपरा विद्या का ज्ञान अन्यत्र दुर्लभ है। व्रहमजीव जगत, कर्म, योग, भक्तियोग, ध्यान मार्ग, समन्वय मार्ग, मोक्ष, माया आदि गीता में उपलब्ध हैं। निष्काय कर्म योग की विचार धारा मानव कल्याण हेतु महत्वपूर्ण हैं। गीता की शिक्षा आज के युग में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। मानव को अपने संकीर्ण आवेगों पर विजय प्राप्त करने का साधन है। शिक्षा के सम्प्रत्यय, उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण, विधियां, विद्यालय अनुशासन, शिक्षक–शिक्षार्थी सम्बन्धों पर भी उपदेशों में वर्णित अत्याधुनिक समाज के लिए उपादेय है।

संदर्भ ग्रन्थः–

ओड़ एल0 के0 'शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठ भूमि' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी 7 वां संस्करण जयपुर 2006 पृ0 128–129

पाण्डेय प्रो0 राम शकल 'पाश्चाल्य एवं भारतीय शिक्षा दर्शन' आर लाल बुक डिपो मेरठ, 2014 पृ0 237–252

रूहेला, प्रो0 एस0पी0 'शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार' अग्रवाल पल्लिकेशन प्रथम संस्करण आगरा 2010 पृ0 132–135

सिंह डॉ0 मधुरिमा एवं डा0 महेश एवं 'शैक्षिक दर्शन एवं विचारक' विभोर ज्ञान माला, प्रथम संस्करण, आगरा, 2012 पृ0 142–149

श्रीमद् भगवदगीता अध्याय 2 श्लोक 7

श्रीमद् भगवदगीता अध्याय 3 श्लोक 4

श्रीमद् भगवदगीता अध्याय 4 श्लोक 7,8,9,27

श्रीमद् भगवदगीता अध्याय 6 श्लोक 7,32

श्रीमद् भगवदगीता अध्याय 7 श्लोक 7,10

श्रीमद् भगवदगीता अध्याय 9 श्लोक 20,45

श्रीमद् भगवदगीता अध्याय 13 श्लोक 7,22,26

श्रीमद् भगवदगीता अध्याय 18 श्लोक 54